Total No. of Pages: 02

[Total No. of Questions:05]

1795

8004

M.A. (Previous) - Examination 2026
HINDI
Paper-Fourth
(MADHYA KALEEN KAVYA)
(मध्यकालीन काव्य)

Duration of Examination: 3 Hours
परीक्षा की अवधि: 3 घण्टा

Max. Marks: 100
पूर्णांक: 100

1795

Instructions to the Candidates:
परीक्षार्थी के लिए निर्देश:-

नोट:- *प्रत्येक प्रकरण से एक प्रश्न करना अनिवार्य हैं। किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर की अधिकतम सीमा 500 शब्द है।*

---

1. निम्न पद्यावतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 9

क. जो तुम त्यागो राम, हौं तो नहिं त्यागों।
परिहरि पाँय कहि अनुरोगों।।
सुखद सुप्रभु तुम-सों जग माहिं ।
सावन-नयन-मन-गोचर नाहिं।।
हौं तो कुजाचक, स्वामी सुदाता।
हौं कुपूत, तुम ही पितु-माता''
जो पै कहुँ कोउ पूछत बातो।
तो तुलसी बिनु मोल बिकातो''

अथवा

1795

मोहि मूढ़ि मन बहुत बिगोयो।
याके लिए सुनहु करूनामय, मैं जन जनमि जनमि दुख रोयो।।
सीतल मधुर पियूष सहज सुख, निकटहि रहत दूर जनु खोयो।
बहु भाँतिनु भ्रम करत मोह बस, वृथहिं मन्दमति बारि बिलोयो।।
करम-कीच जिय जानि, सानिचित, चाहत कुटिल मलहिमल धोयो।
तृषावन्त सुरसरि बिहाय सठ फिरि-फिरि, बिकल अकास निचोयो।।
तुलसीदास प्रभु कृपा करहु अब, मैं निज दोष कछू नहीं गोयो।
डासत ही गई बीति निसा सब, कबहुन नाथ नींद भरि सोयो।।

ख. जोगिया से प्रीति कियाँ दुख होइ।। 9
प्रीति कियां सुख ना मोरी सजनी, जोगी मित न कोइ।।
रात-दिवस कल नाहिं परत है, तुम मिलियां बिन मोइ।।
ऐसी सूरत या जग माहीं, फेरि न देखी सोइ।।
मीरां के प्रभु कबरे मिलोगे, मिलियाँ आणंद होइ।।

अथवा

तब तौ छवि पीवत जीवत है, अब सोचन लोचन जात जरे।
हिय पोष के तोष सुप्रान पले, विललात महादुख दोष-भरे।।
घन-आनंद मीत सुजान बिना, सब ही सुख-साज समाज टरे।
तब हार पहार से लागत हैं, अब आनि कै बीच पहार परे।।

ग. ऊधो! तुम अति चतुर सुजान।
जेहि पहिले रंग रंगी स्यामरंग, तिन्हें न चढ़े रंग आन।।
है लोचन को बिरद किए श्रुति, गावत एक समान।
भेद चकोर कियो तिनहू में, बिधु प्रीतम रिपु भान।।
बिरहिन बिरह भजै पा लागों, तुम हो पूरन ज्ञान।
दादुर जल बिनु जिये पवन भखि, मीन तजै हठि प्रान।।
बारिजबदन नयन मोरे षटपद, कब करि हैं मधुपान।
सूरदास गोपिन प्रतिज्ञा, छुवत न जोग विरान।।

अथवा

देखियत कालिन्दी अति कारी।
कहियो, पथिक! जाय हरि सौं, ज्यों भई विरह-जुर जारी।।
मनो पलिका पै परी धरनि धौंसि, तरंग तलफ तनु भारी।
तटबारू उपचार-चूर मनो, स्वेद प्रवाह पनारी।।
बिगलित कच कुस कास पुलिन मनो, पंकज कज्जल सारी।
भ्रमर मनो मति भ्रमर चहूँ दिसि, फिरती है अंग दुखारी।।
निसदिन चकई ब्याज बकत मुख, किन मानहुँ अनुहारी।
सूरदास प्रभु जो जमुना गति सो गति भई हमारी।।

घ. कौन भाँति रहि है बिरहु, अब देखिबी मुरारि।
बींधै मोसौं आइ कै, गीधे गीधहिं तारि।।
चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि, ए वृषभानुसुता, वे हलधर के बीर।।
करि फुलैल को आचमनु मीठौ कहत सराहि।
रे गन्धी! मति अन्ध तू इतर दिखावत काहि।।

अथवा

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब में, अपत कटीली डार।।
ज्यौं-ज्यौं बढ़ती विभावरी, त्यौं-त्यौं बढ़त अनंत।
ओक-ओक सब लोक सुख, कोक सोक हेमंत।।
मोहि तुम्हें बाढ़ी बहस, को जीतै जदुराज।
अपने-अपने बिरद की, दूहूँ निबाहत लाज।।

2. भ्रमरगीत के आधार पर सूर के विरह वर्णन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए। 16

अथवा

भ्रमरगीत के काव्य सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।

3. एक सफल गीतिकाव्य की दृष्टि से 'विनय पत्रिका' की उपलब्धियों पर विचार कीजिए। 16

अथवा

विनय-पत्रिका के कथ्य को स्पष्ट करते हुए उसमें निहित तुलसी के उद्देश्य पर विचार कीजिए और बतलाइये कि तुलसी उसमें कहाँ तक सफल रहे हैं?

4. ''बिहारी ने अपने दोहों में 'गागर में सागर' भरने की बात चरितार्थ की है।'' इस कथन को सोदाहरण समझाइये। 16

अथवा

बिहारी के प्रकृति चित्रण की समीक्षा कीजिए।

5. मीरा पदावली के आधार पर मीरा की विरहानुभूति को उदाहरण सहित समझाइये। 16

अथवा

रीतिकाल के कवियों मे घनानंद का स्थान निर्धारित कीजिए।